Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

शुक्रनीति का महत्व

डॉ. अवनीश कुमार
इतिहास विभाग,
बाबा साहेब भीमराव
अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, बिहार,भारत।

सारांश –शुक्रनीति मात्र सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से ही महत्व की कृति नहीं बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। शुक्रनीति के राजनीतिक विचार एवं संस्थाओं से सम्बन्धित अध्ययन का वर्तमान समय में प्रगतिशील समाज के लिए पर्याप्त महत्व है। अतएव शुक्रनीति में वर्णित राजनीतिक विचार एवं संस्थाओं का अध्ययन महत्त्वपूर्ण ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

मुख्य शब्द–शुक्रनीति, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, रामायण।

किसी भी ग्रन्थ की महत्ता उसके रचनाकाल की प्राचीनता में निहित न होकर उस ग्रन्थ की वर्ण्य और उसमें दबे विचारों की श्रेष्ठता तथा परम्परा में निहित होती है। अतः उपर्युक्त ऐतिहासिक विवेचन इस ग्रन्थ की विचार परम्परा को जानने का मात्र एक साधन है न कि उसके रचनाकाल के निर्णय का। इसलिए इतिहासकार कीय का यह मत कि "शुक्रनीति एक बेकार की कृति है" उसके रचनाकाल के निर्णय से उत्पन्न खीज का ही परिणाम हो सकती है जिससे उनके राजनीति विषयक अज्ञान का ही घोतक होता है भले ही कीय महाशय इतिहास के बहुत बड़े पण्डित क्यों न रहे हों।

शुक्रनीति में वर्णित सामाजिक व्यवस्था सुदृढ़ भौतिक आधारों पर स्थित थीं। यही कारण है कि वाल्मीकि रामायण की भांति वर्णाश्रम–व्यवस्था का विस्तृत वर्णन शुक्रनीति में प्राप्त नहीं होता है किन्तु फिर भी समाज के भौतिक आधार के रूप में महर्षि शुक्र ने वर्णाश्रम व्यवस्था को ही स्वीकार किया है। सामाजिक व्यवहार के विभिन्न नियमों का वर्णन भी उपलब्ध है।

अतः शुक्रनीतिकार ने चारों आश्रमों का वर्णन उनके कर्त्तव्यों के साथ किया है। सभी जाति एवं वर्ण आश्रम के व्यक्तियों को अपने–अपने कर्त्तव्य के पालन का निर्देश भी दिया है।

आचार्य शुक्र का मत है कि सम्पूर्ण विजाति के लिए यज्ञ करना, वेद पढ़ना, दान देना इत्यादि तीन कर्म है लेकिन ब्राह्मणों के लिए यज्ञ करना, वेद पढ़ना दान लेना ये तीन कर्म आजीविका के लिए विशेष रूप से अधिक है। कोई भी ब्राह्मण तभी गुरू हो सकता है जब कि उसने सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं का अध्ययन कर लिया हो इनके अध्ययन के अभाव में नहीं। क्षत्रियों के कर्म सज्जनों की रक्षा करना, दुष्टों का नाश करना, अपने अंश को ग्रहण करना आदि उनकी आजीविका के लिए विशेष माने हैं जबकि वैश्यों की जीविका की दृष्टि से विशेष कर्म खेती करना, गोपालन तथा व्यापार करना प्रमुख रूप से निश्चित किये हैं। जीविकार्य नौकरी करना तथा नीच कर्म करना शुद्रादि के लिए माने हैं। इस प्रकार आचार्य शुक्र ने कर्मों के भेद द्वारा सभी धर्मों का भरण–पोषण युक्ति निश्चित की है।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शुक्राचार्य ने जीविका निर्धारित करने के लिए कर्म सिद्धान्त का आश्रय लिया है। जाति के सन्दर्भ में उन्होंने अत्यधिक रूढ़िवादिता का परिचय नहीं दिया अपितु आचरण की श्रेष्ठता को ही जाति की श्रेष्ठता का कारण माना है।

आचार्य शुक्र ने स्पष्ट किया है कि जन्म से उत्तम वर्ण का मनुष्य संसर्गवश नीच हो जाता है किन्तु जन्म से नीच वर्ण का मनुष्य संसर्गवंश उत्तम नहीं हो सकता।मनुष्य कर्म के द्वारा तत्काल उत्तम तथा नीच कहलाने लगता है जबकि गुणों के द्वारा कुछ समय पश्चात् उल्लंघन या नीच माना जाता है। उनका मत है कि संसार में जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र या मलेच्छ नहीं होता अपितु गुण और कर्म के भेद से ही होता है क्योंकि सम्पूर्ण जीव ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं किन्तु वे सभी ब्रह्मण नहीं कहला सकते। उनके वर्ण से और पिता से ब्रह्मतेज प्राप्त नहीं होता है। इस प्रकार आचार्य शुक्र ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शुद्र और म्लेच्छ आदि सभी के अलग–अलग लक्ष्य स्पष्ट किये हैं। उन्होंने विद्या तथा कला के आश्रय से उनके नाम के अनुसार अनेक जातियों की कल्पना की है। शुक्रनीतिकार ने विभिन्न प्रकार की विद्याओं तथा कलाओं का मात्र वर्णन ही नहीं किया। अपितु मुर्तिकला तथा चित्रकला आदि का भी अनेक स्थलों पर विशद वर्णन प्रस्तुत किया ह जिससे उस समय के समाज का चित्र स्पष्ट होता है।

आर्थिक दृष्टि से भी शुक्रनीति बहुत ही महत्त्व की कृति है, इसमें प्राप्त विवरण से स्पष्ट होता है– उस समय विभिन्न प्रकार के धन–धान्य एवं रत्न, वस्त्राभूषण इत्यादि रखन की विस्तृत व्यवस्था थी। आचार्य शुक्र ने रत्न , धातु, औषधि, धान्य इत्यादि की जानकारी व उनके गुण–दोषों का पर्याप्त मात्रा में वर्णन किया है। शुक्रनीति में विभिन्न व्यवसायों के वर्णन से स्पष्ट है कि समाज व्यावसायिक दृष्टि से पर्याप्त उन्नत

व्यवस्था में था खेती आदि के वर्णन से प्रकट होता है कि उस युग में अनन इत्यादि के उत्पादन पर विशेष बल दिया जाता था। कार्य विशेषीकरण से सिद्धान्त के द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति अपने–अपने कार्य में रत रहते थे और उसी से अपनी स्वतंत्र आजीविका करते थे। समाज के व्यावसायिक लोग सूद पर भी धन लगाते थे लेकिन उस समय सारा धन सूद पर लगाकर ही जीविका उपार्जन नहीं किया जाता था।

इस प्रकार शुक्रनीति में वर्णित आर्थिक व्यवस्था बहुत ही विकसित अवस्था में थी।

शुक्रनीति का महत्व मात्र उसके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में नहीं अपितु इसकी सर्वाधिक महत्ता राजनीतिक जीवन में भी है। राज्य की उत्पत्ति के दैवीसिद्धान्त की विवेचना एवं राज्य की प्रकृति के सावयव सिद्धान्त का वर्णन महर्षि शुक्र ने किया है। राजा के औचित्यपूर्ण अवलम्बन मात्र से देवतशि और अनौचित्य के अवलम्बन मात्र से राक्षालांश के भेद, राजा के सन्दर्भ में किये गये हैं। यद्यपि यह सही है कि शुक्रनीति में राजतंत्रात्मक व्यवस्था है लेकिन उसका स्वरूप, निरंकुश न होकर नियंत्रित ही प्रतिपादित है।

मंत्रिमंडल के दस सदस्यों के कार्य विभाजन का सांगोपांग वर्णन मिलता है। मूल्यों की पदोन्नति उनके स्थानान्तरण का विचार उपलब्ध होता है। नियुक्ति के लिए विभिन्न योग्यताओं का वर्णन भी शुक्रनीति में उपलब्ध होता है। उसमें मंत्रिमण्डलीय प्रणाली का ऐसा विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है वह वर्तमान समय की व्यवस्था से बहुत सीमा तक साम्य रखता है। न्याय व्यवस्था का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन शुक्रनीति में किया गया है। छोटे न्यायालयों में अपील की प्रथा व उनके समन्वयकारी दृष्टिकोण से शुद्ध व निष्पक्ष शुक्र ने संकटकालीन व्यवस्था सम्बन्धी विचारों का प्रतिपादन किया है जो वर्तमान विचारों से बहुत कुछ समानता रखते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शुक्रनीति मात्र सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से ही महत्व की कृति नहीं बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। शुक्रनीति के राजनीतिक विचार एवं संस्थाओं से सम्बन्धित अध्ययन का वर्तमान समय में प्रगतिशील समाज के लिए पर्याप्त महत्व है। अतएव शुक्रनीति में वर्णित राजनीतिक विचार एवं संस्थाओं का अध्ययन महत्त्वपूर्ण ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. आर.एस.शर्मा– ऐस्वैक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल आइडियाज एंड इन्सटीच्यूशन एशियंट इंडिया, दिल्ली–11ण
2. मैक्समूलर :– ए द्विस्टरी ऑफ एशिएंट संस्कृत लिट्रेचर पृ0– 01ण
3. बेनी प्रसाद – दि स्टेट इन एसिएंट इंडिया पृष्ठ– 498
4. कास्ट इन इंडिया– पृष्ठ – 198
5. ए हिस्ट्ररी ऑफ एशिएंट संस्कृत लिटरेचर पृष्ठ–18
6. कलकत्ता रिव्यू जिल्द 35 ;1887द्ध
7. एशिएंट इंडिया पृष्ठ – 158 . 191
8. रंगास्वामी अलंमगार – सम आस्पैक्टस ऑफ एशिएंट इंडिया पॉलिटी पृष्ठ–87